आरती असुर निकंदन की

धुन- आरती कुंज बिहारी की

आरती असुर निकंदन की।
पवनसुत केशरी नंदन की ।।

1.ज्ञान के सागर हैं हनुमंत।
पड़े पद युगल उपासक संत।
कमल हिय राजै सिय-भगवंत ।।

परमप्रिय-2
परमप्रिय भक्त शिरोमणि की ।।
पवन सुत केशरी नंदन की ।।

आरती असुर निकंदन की।
पवनसुत केशरी नंदन की ।।

2.सीय-रघुवर के तुम प्यारे।
साधु-संतन के रखवारे।
असुर कुल के तुम संहारे।

परमबल-2
परम बलवान शिरोमणि की ,
पवन सुत केशरी नंदन की ।।

आरती असुर निकंदन की।
पवनसुत केशरी नंदन की ।।

3. बुद्धि,बल,विद्या वारिधि तुम।
   बिगड़े सब काज सवारे तुम।
   विभीषण के रखवारे तुम।

   परम गुरु-2
   परम ज्ञानी, विज्ञानी की ,
   पवन सुत केशरी नंदन की ।।

   आरती असुर निकंदन की।
   पवनसुत केशरी नंदन की।।

   4.सिया के बिगड़े संवारें तुम।

राम सेवा मतवाले तुम।
लखन के रखवाले हो तुम।

समर्पित-2
समर्पित त्यागी दानी की ,
पवन सुत केशरी नंदन की ।।

आरती असुर निकंदन की।
पवनसुत केशरी नंदन की।।

5.धनुर्धर पूजक-पूज्य हो तुम।
सखे गोविन्द के प्यारे तुम।
युद्ध में ध्वज रखवारे तुम ।

परम श्री-2
परम रक्षक बलिदानी की,
पवन सुत केशरी नंदन की ।।

आरती असुर निकंदन की।
पवन सुत केशरी नंदन की ।।

लेखक एवं गायक - डॉ गोविंद देवाचार्य जी महाराज (पूज्य बाबा श्रील)

https://bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/34524/title/aarti-ashur-nikandan-ki

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |